महान थे इसीलिए 'महात्मा' कहलाए

Gandhi with Maniben, daughter of Sardar Patel, on his day of departure for Round Table Conference, London, August 29, 1931

अपनी विभिन्न यात्राओं के दौरान गांधी जी ने देखा कि 'देश में हजारों लाखों लोग ऐसे हैं जो सिर्फ बड़ी मुश्किल से लंगोटी की व्यवस्था कर पाते हैं।' गहन विचार के बाद गांधी जी ने गरीबों का दुःख बांटने के लिए वस्त्रों का परित्याग कर 'आधी धोती' को धारण कर लिया। उन्होंने निर्णय लिया कि, 'जब तक देश में एक भी नागरिक ऐसा है जिसके पास पूरा तन ढकने को वस्त्र न हो तब तक मैं इस आधी धोती में रहूंगा।'

'वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीर परायी जानी रें'... इस भजन के साथ ही हमारी आंखों में एक छवि उभरती है वह है एक महात्मा की छवि। आधी धोती में लिपटा, चरखा कातता एक कृशकाय शरीर, लेकिन अतीव शक्ति सम्पन्न, दृढ़, अड़िग और निडर व्यक्तित्व जिसने इस भजन को जीवन में धारण किया था अर्थात जो दूसरों की पीड़ा को जाने, पहचाने, जिये, आत्मसात करे वही तो सच्चा मानव है। महात्मा जो महामानव थे, वे हर दुःख की पीड़ा को जीते थे और हर सच्चन की व्यथा को पीते थे, तभी तो वे इस भजन को गा सके थे।

देश की सेवा, उनके लिए देश के असहाय और कमजोर वर्ग की सेवा थी। 'मेरे सपनों का भारत' पुस्तक में वे लिखते हैं कि 'मेरे लिए देश प्रेम और मानव प्रेम में कोई भेद नहीं है दोनों एक ही हैं। मैं देश प्रेमी हूं क्योंकि मानव प्रेमी हूं।' निर्धनता से जूझते व्यक्तियों से कहते हैं कि, 'मनुष्य जाति ईश्वर को जिन नामों से पहचानती है उनमें से एक नाम दरिद्र नारायण है, उसका अर्थ है गरीबों का या गरीबों के हृदय में प्रकट होने वाला ईश्वर'। हम महात्मा को पहचानते हैं कहीं उनके गोल चश्मे से, कहीं उनकी लाठी से, कहीं उनके चरखे से और कहीं उनकी धोती से। महात्मा का चरखा और उनकी धोती दोनों का ही संबंध उनके मन की विशाल मानवता से ही है।

गांधी जी ने बिहार के तिहका ग्राम में विद्यालय खुलवाया जिसके उद्घाटन समारोह में उनकी धर्मपत्नी कस्तूरबा गांधी भी शमिल हुई थीं। उद्घाटन समारोह में महिलाओं और बच्चों की भारी भीड़ हर्षोल्लास के साथ उमड़ रही थी। गांधी जी प्रफुल्लित महिलाओं को देखकर बा से बोले, 'कस्तूरबा, उन महिलाओं की धोतियां देखो कितनी मैली हैं?' मेरा विचार है कि तुम उन महिलाओं के पास जाकर उन्हें स्वच्छ वस्त्रों का महत्व समझाओ। कस्तूरबा उन महिलाओं के बीच गयीं और उनसे कहा कि हमें आपसे कुछ बात करनी है। महिलाओं ने कहां, हां क्यों नहीं?' कस्तूरबा ने उन महिलाओं की अनुमति प्राप्त कर कहा कि, 'यदि शरीर स्वच्छ रखा जाए तो वह स्वस्थ रहेगा और शरीर स्वस्थ्य रहेगा तो मन भी स्वस्थ रहेगा।' उन्होंने स्पष्ट किया कि, 'शरीर को स्वच्छ रखने के साथ ही जरूरी है उस पर पहने गये वस्त्र को स्वच्छ रखना।' तब महिलाओं ने कहा कि, 'इसके लिए आपको हमारी झोपड़ियों में चलना होगा।' उनके अनुरोध पर बा उनकी झोपड़ियों में गयीं। एक महिला ने बा से कहा कि, 'आप धोतियां धोने के विषय में हमसे कहना चाहती हैं ना' उन्होंने बा को बताया कि, 'हमारे पास धोतियां नहीं हैं। धोने के बाद यह धोती सुखाकर पहननी होती है, इसलिए इसे हम प्रतिदिन धो नहीं सकते।' कस्तूरबा ने गांधी जी से कहा कि, 'इन महिलाओं के पास दूसरी धोतियां ही नहीं हैं। जो वे इन धोतियों को रोज धो सकें।'

इस घटना ने गांधी जी को विचलित कर दिया तथा वे कई दिनों तक उन महिलाओं की स्थिति पर विचार करते रहे। कुछ दिनों बाद गांधी जी को रेलगाड़ी से मदुरै जाना पड़ा डिब्बे में अनेक यात्रियों को देखा जो विदेशी वस्त्रों को पहने थे। यह देखकर गांधी जी का स्वदेश प्रेमी मन शांत न रह सका और वे उन यात्रियों के पास पहुंच कर बात करने लगे कि, 'आप सभी लोगों ने विदेशी वस्त्रों को पहन रखा है, जब हम अपनी आजादी की लड़ाई लड़ रहे हैं तब हमें विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करना चाहिए।' उन यात्रियों ने गांधी जी से कहा कि, 'हमारे पास इतना पैसा नहीं है कि हम महंगी खादी पहन सकें।'

अपनी विभिन्न यात्राओं के दौरान गांधी जी ने देखा कि देश में हजारों लाखों लोग ऐसे हैं जो सिर्फ बड़ी मुश्किल से लंगोटी की व्यवस्था कर पाते हैं। गहन विचार के बाद गांधी जी ने गरीबों का दुःख बांटने के लिए वस्त्रों का परित्याग कर 'आधी धोती' को धारण कर लिया। उन्होंने निर्णय लिया कि, 'जब तक देश में एक भी नागरिक ऐसा है जिसके पास पूरा तन ढकने को वस्त्र न हो तब तक मैं इस आधी धोती में रहूंगा।' इस संकल्प को गांधी जी ने जीवन पर्यन्त निभाया। महंगी खादी व बेरोजगारी की बात गांधी जी के मन को हर समय कचोटती रहती थी। इन दोनों विषयों पर लम्बे समय तक विचार करने के बाद गांधी जी ने चरखे को अपनाने की बात कही।

उन्होंने कहा कि 'हाथ की कताई और हाथ की बुनाई के पुर्नजीवन से भारत के आर्थिक और नैतिक पुनरुद्धार में सबसे बड़ी सहायता मिलेगी।' करोड़ों को भूखों मरने से बचाना हो तो उन्हें इस योग्य बनाना पड़ेगा कि वे अपने घरों में फिर से कताई जारी कर सकें और हर गांव को अपना ही बुनकर वापस मिल जाए।' चरखे के सम्मान का दावा करते हुए कहा कि, 'वह हमारी गरीबी की समस्या को लगभग बिना कुछ खर्च किए और बिना किसी दिखावे के अत्यंत स्वाभाविक ढंग से हल कर सकता है।' गांधी जी ने कहा कि, चरखा एक ऐसी आवश्यक चीज है जो हर घर में होना ही चाहिए। वह राष्ट्र की समृद्धि और उसकी आजादी का प्रतीक है। गांधी जी के आश्रम में चरखा कातना अनिवार्य था।

'सेवा' गांधी जी के व्यक्तित्व का एक ऐसा पक्ष था जो उनकी मानवीय 'संवेदना' और 'करूणा' को नये आयाम देता है। दक्षिण अफ्रीका के नाटाल नामक स्थान पर गांधी जी ने एक बड़ा सा मकान किराए पर लिया। एक दिन सुबह-सुबह गांधी जी घर से बाहर निकले उन्हें एक कोढ़ी व्यक्ति सड़क पर मिला गांधी जी ने उससे पूछा,'अरे आप सड़क पर' तब कोढ़ी व्यक्ति बोला, 'मेरा शरीर देखकर आपको नहीं लगता कि अब इस सड़क के अलावा मेरा कोई स्थान नहीं है। कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्ति को घर में कौन रखेगा।' गांधी जी ने कहा नहीं नहीं, ऐसा न कहें। 'आइये, मेरे साथ आइये, मेरे घर में आपके लिए स्थान है' और इस प्रकार गांधीजी उस वृद्ध कुष्ठ रोगी को अपने घर ले आये। घर लाकर उन्होंने अपने हाथों से उसके घाव साफ किये, दवा लगाई। कुछ समय बाद उस व्यक्ति को अस्तपाल भेजना पड़ा। इससे गांधी जी को काफी कष्ट हुआ।

वह व्यक्ति जिन परिस्थितियों में गांधी जी को सड़क पर मिला उन्होंने गांधीजी को इतना व्यथित किया कि उन्होंने वहीं के एक निवासी डॉ. बूथसेन्ट एडम्स की देखरेख में एक दातव्य अस्पताल खोल दिया जहां दीन-दुखियों की सेवा की जाती थी। गांधीजी स्वयं अपना बचा हुआ समय इस अस्पताल में सेवा कार्य के लिए देते थे। सेवा कार्यों ने गांधीजी को इतना संतोष और आत्मसुख दिया कि उनकी जीवन शैली ही बदल गयी। वे एकदम सादगीपूर्ण जीवन जीने लगे। यहीं से उनके मन में आश्रम बनाने का विचार आया। उन्होंने अपना एक आश्रम दक्षिण अफ्रीका में फीनिक्स नामक स्थान पर बनाया और फिर भारत वापस आने पर भी वे आश्रम बनाकर ही रहे।

गांधी जी ने स्त्रियों की सामाजिक स्थिति सुधारने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्त्रियों को परदे से बाहर लाना, उनकी शिक्षा के महत्व पर जोर देना, उनको निर्णय लेने का अधिकार दिलाना, यहीं नहीं गांधी जी ने उन्हें आजादी के आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इन सबके पीछे महात्मा की मानवता मूलक भावना ही थी। स्त्रियों के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए महात्मा कहते हैं, 'स्त्रियों के अधिकारों के प्रश्न पर मैं किसी प्रकार का समझौता स्वीकार नहीं कर सकता। उन पर ऐसा कोई भी कानूनी प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए जो पुरुषों पर न लगाया गया हो। पुत्रों और कन्याओं में किसी तरह का भेद नहीं होना चाहिए। उनके साथ पूरी समानता का व्यवहार होना चाहिए।'

महात्मा की अछूतोद्धार की संकल्पना भी उनके विशाल हृदय की परिचायक है। साबरमती आश्रम में उन्होंने हर कुल में जन्मे व्यक्ति के लिए समान अधिकार की व्यवस्था की। समाज के उपेक्षित और पिछड़े लोगों को उन्होंने ईश्वर की संतान का दर्जा देते हुए 'हरिजन' नाम दिया। उन्हें आगे बढ़ाने और विश्वास जगाने के लिए महात्मा ने 'हरिजन' नाम से समाचार पत्र का प्रकाशन भी किया। महात्मा का हृदय मानवता और मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत था। पराधीनता से मुक्ति पाने के लिए भी उन्होंने अहिंसा, सत्याग्रह और अनशन का ऐसा मार्ग चुना कि वे क्रूर अंग्रेजों के हृदय में भी मानवीय भावों का संचरण कर सके।

गांधीजी के अनुसार किसी मनुष्य को किसी दूसरे पर शासन करने का अधिकार नहीं है। 'आमरण अनशन' भावों को जगाने का एक ऐसा साधन बनकर उभरा कि पूरी दुनिया पर शासन करने वाले अंग्रेज भी हिल गये। यह मानवीय भाव ही था कि लोग सब कुछ छोड़ उनके पीछे चल दिए। पूरा देश उठ खड़ा हुआ था, एक क्षीण सी काया के नेतृत्व में क्योंकि इस क्षीण सी काया में एक विराट मानव हृदय था जिसमें सभी को समाहित कर लेने की क्षमता थी। ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, जाति, धर्म सबका भेदभाव मिटा महात्मा सबको गले लगा सके, सबको प्रेम दे सके, सबका प्रेम पा सके, वही प्रेम उनकी शक्ति बना इसलिए वे बापू बन सके और गा सके- 'वैष्णव जन ते तेने कहिए, जो पीर परायी जाने रे।'